अध्याय–2
रानी लक्ष्मीबाई
(संकलित)

1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम के कालखंड में झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ऐसी अनुपम महिला थीं जिसका जीवन, आचरण व कौशल सम्पूर्ण समाज की प्रेरणा का स्रोत है। प्रतिभा, पुरुषार्थ व प्रखर राष्ट्रभक्ति में वह विश्व का अद्‌वितीय उदाहरण है। नाम तो इनका लक्ष्मी था, अतः गुण–धर्म व धन–सम्पति की भण्डार मानी जानी चाहिए परन्तु इन्होंने अपने व्यवहार से प्रकट कर दिया था कि इनमें असीम साहस था। कोमल कलाइयों में चूड़ियाँ तो धारण करती थीं, परन्तु घोड़े पर सवार होकर करतब करते समय तलवार हाथ में लेकर जो पराक्रम करती थीं तो जन–जन के जीवन में उत्साह की तरंगें दौड़ उठती थीं।

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी में 19 नवम्बर 1835 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मोरोपन्त ताम्बे व माँ का नाम भागीरथी था। बचपन में इस बालिका का नाम मणिकर्णिका रखा गया था परन्तु स्नेह से लोग इन्हें मनुबाई कहकर पुकारते थे। चार वर्ष की अवस्था में इनकी माता का देहावसान हो गया। पिता पर ही उनके पालन–पोषण का भार आ गया। उसी कालखण्ड में मोरोपन्त ताम्बे अपने परिवार को लेकर काशी छोड़कर ब्रह्मवर्त (बिठूर, कानपुर) पहुँच गए तथा बाजीराव के आश्रय में रहने लगे। वहाँ उन्हें छबीली कहकर पुकारा जाने लगा। बचपन से ही छबीली का नाना साहब पेशवा के साथ अत्यन्त आत्मीयतापूर्ण व पवित्रतायुक्त सम्बन्ध था। वहीं पर तांत्या टोपे से भी उनका सम्पर्क बन गया था। नाना साहब के साथ–साथ ही छबीली के पराक्रम का प्रशिक्षण प्रारम्भ हो गया था। वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर अभ्यास करते थे एवं शस्त्र चलाना सीखते थे। छबीली का अभ्यास इतना उत्तम था कि उसका कौशल नाना साहब पेशवा से अच्छा होने लगा। जैसे–जैसे उसकी आयु बढ़ने लगी, पिता के मन में उसका विवाह करने का भाव आया। उन दिनों विवाह अल्प आयु में ही होता था। सन् 1842 में छबीली का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव के साथ संपन्न हो गया। उसी समय वह झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगी। दरबार में वह जनप्रिय बन गईं व उनके जीवन में समाज हित के भाव के कारण जन–जन में उनके प्रति भक्ति पनप उठी। महिला सेविकाओं व सहयोगियों से इनके अत्यन्त आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध थे। अतः उनको भी शस्त्रास्त्र चलाने का अभ्यास करवाया जाने लगा।

कुछ दिनों बाद लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु शैशव में ही उसकी मृत्यु हो गई। इसके परिणामस्वरूप महाराजा गंगाधर राव के मन में असीम वेदना पैदा हो गई। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि वे भी 21 नवम्बर, 1853 को दिवंगत हो गए। इनके आकस्मिक निधन के बाद महारानी ने एक बच्चे दामोदर को गोद लिया। पति के दिवंगत होने पर उन्होंने राज्य का दायित्व सँभाल लिया। अपने आभूषण उतारकर पुरुष वेश में उन्होंने दरबार में जाना प्रारम्भ कर दिया। कभी–कभी नगर के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर प्रजा के कष्टों व समाज की समस्याओं की पूरी जानकारी प्राप्त करके उनका निदान करती थीं।

इस घटना के उपरांत अंग्रेजी शासकों ने षडयन्त्रपूर्वक रानी लक्ष्मीबाई को न तो झाँसी का अधिपति स्वीकार किया और न उसके दत्तक पुत्र दामोदर को उनकी संतान के रूप में स्वीकार किया। भारतीय परम्परा के अनुसार दामोदर ही भावी राजा था परन्तु उसकी आयु अत्यंत कम होने के कारण उसकी माँ ही सत्ता का दायित्व सँभाल रही थीं। अंग्रेजी शासकों ने इसी श्रेणी के उन अनेक लोगों की मान्यता स्वीकार की थी जो अंग्रेजी सत्ता के सहयोगी व समर्थक थे परन्तु महारानी झाँसी व नाना साहब पेशवा के साथ यह व्यवहार नहीं किया गया। अंग्रेजों का यह व्यवहार रानी को बहुत बुरा लगा। अंग्रेजी शासकों की सूचना व निर्देश पाकर लक्ष्मीबाई क्रोधित हुईं और बोल उठीं, ''क्या मैं झाँसी छोड़ दूँगी ? जिनमें साहस हो, वे आगे आए।'' उन्होंने अंग्रेजों को ललकारा।

16 मार्च 1854 को अंग्रेजों ने रानी का राज्य हड़प लिया। रानी लक्ष्मीबाई के मन में अंग्रेजों के प्रति घोर असंतोष एवं घृणा पनप गई। तांत्या टोपे ने आकर उन्हें स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने का सुझाव दिया। उन्होंने क्रांति का दायित्व सम्भाल लिया। अंग्रेजों को मार भगाया तथा झाँसी पर पुनः सत्ता स्थापित कर ली। क्रांतिकारियों ने इस क्षेत्र में अंग्रेजों को इस तरह पराजित किया कि सागर, नौगाँव, बाँद्रा, बन्दपुर, शाहगढ़ तथा कर्वी में अंग्रेजी सत्ता का कोई प्रभाव नहीं बचा था। रानी की सर्वत्र जय–जयकार हो रही थी। विंध्याचल से यमुना तक के क्षेत्र अंग्रेजों से मुक्त हो चुके थे। हिन्दू, मुसलमान, सैनिक, पुलिस, राजा, किसान व बहुत सी महिलाएँ व निर्धन लोग भी संघर्षरत थे। सभी का लक्ष्य स्वाधीनता था।

1858 के प्रारम्भ में अंग्रेजों ने हिमालय की समस्त भूमि को क्रांतिकारियों से छीनकर अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए योजना बनाई। अंग्रेजों की ओर से यमुना व विंध्याचल तक के क्षेत्र को क्रांतिकारियों से मुक्त कराने का दायित्व सर ह्यूरोज को सौंपा गया। अस्त्र–शस्त्र से सुसज्जित तथा बहुत सी तोपों के साथ वह निकल पड़ा। उसकी सहायता के लिए हैदराबाद, भोपाल व कई राज्यों के सैनिक मिल गए। सर ह्यूरोज महू से चलकर झाँसी होते हुए कालपी पहुँचने का निश्चय कर चुका था। उसने 6 जनवरी 1858 को रायगढ़ के दुर्ग पर कब्जा कर लिया। क्रांतिकारियों द्वारा बनाए गए बंदियों को मुक्त करवा लिया। उसके बाद 10 मार्च को वह दानपुर पहुँचा और चन्देरी के सुप्रसिद्ध दुर्ग पर अधिकार कर लिया। वह आगे बढ़ता गया। उसने 20 मार्च को झाँसी से चौदह मील दूर पड़ाव डाल दिया। झाँसी के पास शत्रु की सेना के आगमन का समाचार पाते ही रानी लक्ष्मीबाई अत्यन्त आक्रोशित हो उठी। रानी ने प्रबल संघर्ष की ठान ली। रानी के साथ ही बानपुर के राजा मर्दानसिंह, शाहगढ़ के नेता बहादुर ठाकुर बुंदेलखण्ड के सरदार भी क्रुद्ध हो उठे। सभी ने निर्णय लिया कि देश के सम्मान के लिए अंग्रेजों से युद्ध किया जाए। कठिनाई केवल यही थी कि सैनिकों में वीरता तो थी परन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जिनमें कौशल व अनुशासन का अभाव था। रानी ने तोपों की व्यवस्था की, उनके लिए कुशल संचालक जुटाए।

महिलाओं ने हथियार लिए तो पुरुषों ने तोपें उठाईं। 25 मार्च को युद्ध प्रारम्भ हो गया। पहरेदारों द्वारा गोलियाँ दागी जाने लगीं, तोपें गरजने लगीं। 26 मार्च को अंग्रेजों ने दक्षिणी द्वार का तोपखाना बंद करवा दिया। पश्चिमी द्वार के तोपखाने के गोलंदाज ने चारों ओर प्रहार शुरु कर दिया। उसने अंग्रेजी तोपखाने को उड़ा दिया। अंग्रेजी तोपखाना बंद हो गया। पाँच–छः दिन बाद फिर भयंकर युद्ध हुआ। रानी के तोपखाने ने अंग्रेजों को काफी हानि पहुँचाई। सातवें दिन अंग्रेजों ने तोपें चलाकर दीवार गिरा दी परन्तु क्रांतिकारियों ने रातों रात उसे पुनः खड़ा कर दिया।

आठवें दिन अंग्रेजी सेना शंकर दुर्ग की ओर बढ़ी। दुर्ग के भीतर गोले बरसाना शुरु कर दिया। कुछ लोग हताहत हुए। क्रांतिकारियों ने पुनः पुरुषार्थ का परिचय देते हुए अंग्रेजों की तोपों को शान्त कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई इन सबकी देख–रेख कर रही थी तथा सैनिकों को प्रोत्साहन एवं दिशा–निर्देश दे रही थी। उसी के परिणामस्वरूप अंग्रेज 31 मार्च तक दुर्ग में प्रवेश न कर सके। लक्ष्मीबाई का संदेश पाते ही तांत्या टोपे उनकी सहायता करने झाँसी आ गए तथा उन्होंने अपने सैनिकों को साथ ले अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों तथा तांत्या टोपे के बीच भयंकर युद्ध हुआ। अंग्रेजों की विशाल सेना के सामने तांत्या टोपे के सैनिक डगमगाने लगे। वे भाग खड़े हुए। उनकी तोपें अंग्रेजों के हाथ में आ गई। तांत्या टोपे के 2200 में से 1400 सैनिक मारे गए। तांत्या टोपे की पराजय पर रानी ने झाँसी के नागरिकों को निराश न होकर हौसला रखने का आह्वान करते हुए कहा कि ''हम लोग दूसरों पर निर्भर न रहें, अपने पराक्रम व वीरता का परिचय देने के काम में जुट जाएँ।''

3 अप्रैल को अंग्रेजों का झाँसी पर अंतिम आक्रमण हुआ। उन्होंने मुख्य द्वार से प्रवेश किया। हर कोने से गोलियाँ चलने लगी। सीढ़ियाँ लगाकर अंग्रेजों ने दुर्ग पर चढ़ने का प्रयास शुरू कर दिया। परन्तु सफलता पाना इतना सरल न था। आगे बढ़ने वाले अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया जाता था। रानी लक्ष्मीबाई तथा उसके वीर सैनिकों के सामने अंग्रेजों का वार नहीं चला और अंततः उन्हें पीछे हटना पड़ा। अंग्रेज सैनिक जान बचाकर भागे। मुख्य द्वार पर तो यह स्थिति थी परन्तु दक्षिणी द्वार पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया। वे दुर्ग के भीतर घुस गए। राजप्रासाद में घुसकर उन्होंने रक्षकों की हत्या की, रुपये लूटे और भवनों को ध्वस्त कर डाला। इससे झाँसी का पतन होने लगा। यह स्थिति देखकर लक्ष्मीबाई ने डेढ़ हजार सैनिकों को लेकर दुर्ग की ओर कूच किया तथा अंग्रेजों पर टूट पड़ीं। अनेक अंग्रेज मारे गए, शेष नगर की ओर भागने लगे। परन्तु वहाँ से छिप–छिप कर गोलियाँ चलाने लगे। अंग्रेजों से लोहा लेते हुए झाँसी के अनेक वीरों ने प्राण न्यौछावर किए। अंग्रेजों ने सैनिकों के साथ आम नागरिकों पर भी वार करना शुरु कर दिया, जिससे नगर में हाहाकार मच गया। यह देखकर लक्ष्मीबाई परेशान हो गई। अपनी व्यथा प्रकट करते हुए वह स्वयं अपना बलिदान करने को तैयार हो गई परन्तु झाँसी के स्वामिभक्त सरदार ने उनसे कहा, ''हे महारानी! अब आपका यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है। अतः रात्रि को शत्रु का घेरा तोड़कर आप बाहर निकल जाएँ। यह अत्यावश्यक है।''

रानी ने रात्रि में झाँसी छोड़ने का संकल्प ले लिया। चुनिंदा विश्वस्त अश्वारोही सैनिकों के साथ रानी ने पुरुष वेश धारण कर दुर्ग से प्रस्थान किया। रानी ने अपने दत्तक पुत्र दामोदर को पीठ पर रेशम के कपड़े से बाँध कर हाथों में शस्त्र उठाया। रानी का बदन लौह कवच से ढका हुआ था। द्वार पर खड़े अंग्रेज सन्तरी ने उनसे परिचय पूछा, रानी ने तपाक से उत्तर दिया, ''तेहरी की सेना सर ह्यूरोज की सहायता के लिए जा रही है।'' संतरी उन्हें पहचान न सका। उसे चकमा देकर रानी दुर्ग से बाहर निकल गईं। वो कालपी के मार्ग पर चल पड़ीं। रास्ते में बोकर नामक एक अंग्रेज अधिकारी मिल गया। रानी

ने उसे तलवार से घायल कर दिया व अश्वारोहियों ने अंग्रेज सैनिकों पर इतना घातक आक्रमण किया कि वे भाग खड़े हुए। दो दिन बाद वे कालपी पहुँचीं। एक सौ दो मील की यात्रा करनी पड़ी। वहाँ पहुँचते ही रानी का घोड़ा धराशायी हो गया। उसका जीवन समाप्त होते ही एक समस्या खड़ी हो गई। उन्हें उत्तम स्वामिभक्त घोड़ा चाहिए था।

अंग्रेजों को रानी के दुर्ग छोड़कर जाने का आभास हो गया था। अतः अंग्रेजी सेना ने व्हाटलॉक के नेतृत्व में कालपी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने राव साहब, तांत्या टोपे तथा बाँद्रा, शाहगढ़ व दानपुर के राजाओं के सैनिकों को साथ लेकर अंग्रेजों का सामना करते हुए उन्हें मुँह तोड़ जवाब दिया। लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि इन विविध राज्यों के सैनिकों में पारस्परिक समन्वय एवं अनुशासन का अभाव था, जिसके कारण अंग्रेजों के सामने वे ज्यादा देर टिक नहीं पाए। रानी को कालपी से ग्वालियर की ओर जाना पड़ा। क्रांतिकारियों ने ग्वालियर की जनता को भी रानी की सहायता के लिए प्रेरित किया था। जनता अंग्रेजों को सामने देखकर अपनी सेना के साथ उन पर टूट पड़ी। इस प्रबल आक्रमण से अंग्रेजी सेना बौखला गई। अनेक अंग्रेज सैनिक मौत के घाट उतार दिए गए। परिस्थिति क्रांतिकारियों के पक्ष में बनती देख अंग्रेज कमांडर स्मिथ को पीछे हटना पड़ा। लेकिन संघर्ष रुका नहीं। दूसरे दिन कमांडर स्मिथ ने अधिक सेना लेकर पुनः चढ़ाई कर दी। रानी ने अपने शिविर से बाहर निकल कर पूरे साहस के साथ अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया। लेकिन अचानक किए इस आक्रमण में क्रांतिकारियों के अनेक सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गए। सैनिक संख्या कम हो जाने के कारण रानी समस्या में पड़ गई। अंग्रेज सेना की विजय हुई। विजयी अंग्रेज–सेना चारों ओर से एकत्रित होकर घेरा डालने में जुटी थीं। एक अंग्रेज सैनिक ने रानी की एक सहायक दासी को गोली मार दी। रानी ने मुड़कर उस अंग्रेज–सैनिक को अपनी गोली का निशाना बनाते हुए वहीं ढेर कर दिया।

अब रानी लक्ष्मीबाई तेजी से आगे बढ़ चली। परन्तु वह जिस घोड़े का उपयोग कर रही थी वह इतना कुशल एवं सक्षम न था। आगे बढ़ने पर एक नाला आ गया। महारानी की प्राण–रक्षा इसी पर निर्भर थी कि घोड़ा छलाँग मार कर नाला पार कर जाए परन्तु वह उसका अपना प्रशिक्षित घोड़ा न था। उसने छलाँग नहीं लगाई। इसका फायदा उठाकर कुछ अंग्रेज सैनिकों ने रानी को घेर लिया। सोनरेखा नामक इस नाले पर चारों ओर से शत्रुओं द्वारा घिरी हुई अकेली रानी भूखी शेरनी की तरह अंग्रेजों पर टूट पड़ी। तलवारों से तलवारें बजने लगी। रानी ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अंग्रेजों का सामना किया परन्तु एक अंग्रेज–सैनिक ने मौका पाकर पीछे से रानी के मस्तक पर प्रहार कर डाला। महारानी घायल हो गई परन्तु प्रहार करने वाले अंग्रेज को उसने अपनी तलवार से ढेर कर दिया। उसी समय दूसरे अंग्रेज सैनिकों ने उन पर ताबड़तोड़ प्रहार करना शुरु कर दिया। रानी बेहोश होकर गिर पड़ीं। अचेत महारानी को अंग्रेजों के हाथों बंदी बनने से बचाने के लिए उनके विश्वासपात्र सेवक रामचन्द्र राव देशमुख एवं रघुनाथ सिंह ने उनको उठाकर पास में बनी बाबा गंगादास की झोंपड़ी में पहुँचा दिया।

इस महान क्रांतिकारी व प्रखर देशभक्त रानी को ऐसी स्थिति में देखकर बाबा गंगादास भाव विह्वल हो गए। उन्होंने रानी का आवश्यक प्राथमिक उपचार करते हुए उन्हें पानी पिलाया तथा एक शैया पर लिटा दिया। लेकिन होनहार बलवान है, बाबा रानी को बचा नहीं पाए। रानी लक्ष्मीबाई ने संसार त्याग कर दिया। वक्त की नजाकत को देखते हुए बाबा एवं क्रांतिकारियों ने सूझबूझ से काम लिया। अंग्रेजों की नजर से बचते हुए बाबा गंगादास ने घास–फूस की चिता बनवाकर अपनी झोपड़ी के पास ही उस दुर्गास्वरूपा देवी का दाहसंस्कार किया। बाबा सहित सब उपस्थित क्रांतिकारियों ने चिता की

भस्म से तिलक किया तथा मातृभूमि के प्रति उनके प्रेम एवं योगदान को बारंबार याद किया। मातृभूमि की रक्षार्थ साहस, दृढ़ता एवं सूझबूझ के साथ अंग्रेजों का सामना करने वाली महान देशभक्त नारी महारानी लक्ष्मीबाई अपने समर्पण के कारण संपूर्ण राष्ट्र की श्रद्धा का केंद्र बन गई। दूसरों के सुख के लिए स्वयं के सुखों का बलिदान करने वाली महारानी वंदनीय है। उनका बलिदान–स्थल ग्वालियर हिंदुस्तानियों का तीर्थस्थल बन गया। उनका यह बलिदान सदा–सर्वदा स्मरणीय है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

प्र. 1 रानी लक्ष्मीबाई को स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने का सुझाव देने वाले थे–

(क) नाना साहब पेशवा (ख) तांत्या टोपे

(ग) मोरोपंत ताम्बे (घ) बाजीराव

प्र. 2 रानी लक्ष्मीबाई का प्राणांत कहाँ हुआ–

(क) झाँसी में (ख) कालपी में

(ग) बाबा गंगादास की कुटिया में (घ) अंग्रेज छावनी में

प्र. 3 महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म कहाँ और कब हुआ?

प्र. 4 लक्ष्मीबाई का बचपन कहाँ और किसके साथ बीता?

प्र. 5 मणिकर्णिका झाँसी की महारानी कब और कैसे बनी?

प्र. 6 अंग्रेज शासकों से महारानी का संघर्ष कैसे प्रारम्भ हुआ? स्पष्ट कीजिए?

प्र. 7 तांत्या टोपे ने लक्ष्मीबाई को क्या सुझाव दिया और लक्ष्मीबाई ने उसका सम्मान क्यों किया?

प्र. 8 सन् 1857 ई. में लक्ष्मीबाई एवं अंग्रेजों के मध्य हुए युद्ध का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

प्र. 9 तांत्या टोपे की सेना को अंग्रेजों ने क्या हानि पहुँचाई?

प्र. 10 महारानी लक्ष्मीबाई को किन परिस्थितियों में झाँसी छोड़ना पड़ा?

प्र. 11 अंग्रेजों ने कालपी पर आक्रमण क्यों किया?

प्र. 12 क्रांतिकारियों की सेना को पराजय का मुँह क्यों देखना पड़ा?

प्र. 13 महारानी लक्ष्मीबाई के अन्तिम संघर्ष की महागाथा अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

प्र. 14 महारानी लक्ष्मीबाई का दाहसंस्कार किसने और कहाँ किया?

प्र. 15 सही विकल्प को चिह्नित कीजिए :–

(क) गंगाधर राव लक्ष्मीबाई के पिता/पति/भाई थे।

(ख) लक्ष्मीबाई के पुत्र का नाम तांत्या टोपे/गंगाधर राव/दामोदार राव था।

(ग) लक्ष्मीबाई का बचपन तांत्या टोपे/गंगाधर राव/नानासाहब पेशवा के साथ बीता था।

(घ) लक्ष्मीबाई का जन्म प्रयाग/वाराणसी/ग्वालियर में हुआ था।

पाठ के आसपास

अपने आस पास हुई किसी वीरांगना की ऐसी कहानी हो तो कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए।

कठिन शब्दार्थ

शैशव– शिशु अवस्था /दत्तक– गोद लिया गया पुत्र / हड़पना– अनुचित रीति से ले लेना / बन्दी– कैदी / आक्रोश– गुस्सा / प्रहार– आक्रमण / गोलंदाज– गोला फेंकने वाला / दुर्ग– किला / ध्वस्त– नष्ट / कूच करना– प्रस्थान करना / अश्वारोही– घुड़सवार / कालखण्ड– समयावधि / पराक्रम– बहादुरी / निदान– समाधान / भावी– आगामी/होने वाला / सर्वनाश– समूल नाश / ढेर होना– मृत्यु को प्राप्त होना / सक्षम– योग्य / ललकारना– चुनौती देना/आह्वान करना / आघात– चोट